Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-16, Issue-4, March-2023
www.researchguru.net

'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा की समीक्षा

DR. ASGAR ADAMBHAI RAJA
ASSISTANT PROFESSOR. (HINDI) GOVERNMENT ARTS COLLEGE, WAV DIST-BANASKANTHA

प्रस्तावना:-

विश्व के अनेक महापुरुषों एवं मनीषियों द्वारा लिखित आत्मकथाओं में भारत के भाग्यविधाता राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' का एक महत्वपूर्ण स्थान है | इसका महत्वपूर्ण कारण यह नहीं है कि अपनी प्रस्तुत आत्मकथा में गांधीजी ने चरित्रनायक के रूप में अपने को ही नहीं, अपितु सत्य को प्रतिष्ठित किया है | और इसलिए उन्होंने आत्मकथा को आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' नाम दिया है |

प्रस्तुत आत्मकथा में गांधीजी के जीवन से संबंधित सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत दोनों पक्षों का अत्यंत ही सुंदर ढंग से निरूपण हुआ है | फलस्वरूप इसमें हमें उनकी सत्यप्रियता के अतिरिक्त निर्भीकता, निश्छलता और प्रयोगशीलता के भी दर्शन होते हैं | यही कारण है कि आत्मकथा विलक्षण एवं विशिष्ट बन सकी है | गांधीजी का जीवन सत्य की तलाश का पर्याय था | उनकी सत्य की खोज के विपुल प्रयत्नों का नाम ही 'सत्य के प्रयोग' हैं |

<u>1) स्वलिखित स्वजीवन:-</u>

'आत्मकथा' शब्द का अर्थ है स्वयं अपनी कथा | व्यक्ति के अपने जीवन का आद्योपांत वृतांत ही आत्मकथा है | बचपन से लेकर लेखन-काल तक का कालखंड आत्मकथा में समाविष्ट हो जाता है | आत्मकथा की बुनियादी शर्त है कि रचनाकार स्वयं अपनी कहानी कहता या लिखता है |

गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' पाँच खंडों में विभक्त है | पाँच सौ से अधिक पृष्ठों में व्याप्त 'सत्य के प्रयोग' राष्ट्र के समर्थ प्रतिभासंपन्न महापुरुष की कलम से लिखी हुई एक बेजोड़ आत्मकथा है | गांधीजी की आलोच्य आत्मकथा निसंदेह देश-कालातीत बन गई है | इसीलिए समूचे विश्व के लिए यह आत्मकथा ध्यानाकर्षिक सिद्ध हुई है | इसमें इतिहास का नीरस वर्णन नहीं है, वरन सत्य के प्रयोग का वर्णन है | कृति के केंद्रस्थान में सत्य निहित है | सत्य की तलाश में निकलनेवाले एक साहसी यात्री के जीवन की कटु-मधुर एवं सुखद-दुखद घटनाओं का चित्रण इसमें कुशलतापूर्वक किया गया है | लिओ टॉलस्टॉय के कथन - : 'Truth is the hero of my life' गांधीजी ने निरंतर अपनी दृष्टि के सामने रखा है | सत्य ही उनके लिए परमेश्वर था | अहंकार से वे कोसों दूर रहे | अफ्रीका का आंदोलन हो या राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन हो सर्वत्र उन्होंने कर्म को ही अपना धर्म समझा है| उनकी समस्त प्रवृत्तियों का ध्रुव बिंदु सत्य की प्राप्ति ही रहा | आत्मकथा लेखन के तमाम जोखिम भरे स्थलों को गांधीजी अपनी विनम्रता के सहारे सकुशल पार कर गए |

<u>2). आत्म लक्षिता:-</u>

यह आत्मकथा का दूसरा महत्वपूर्ण लक्षण है | अपने जीवन-काल की समस्त

घटनाओं के चित्रण में उभरनेवाला गांधीजी का 'स्व' भी बड़ा ही प्रबल है | उनका 'स्व' ही सर्व बन गया है | सभी पाठक उनके 'स्व' में आत्म-साक्षात्कार करते हैं | **'मो सम कौन कुटिल खल कामी'** उक्ति अपने को नापने का उनका मानदंड है | इसलिए तो वे कहते हैं - " सत्य के अन्वेषक को एक रजकण से भी नीचे रहना पड़ता है | पूरा जगत रजकण को कुचलता है किंतु जब तक सत्य का पुजारी इतना अल्प नहीं हो जाता कि एक रजकण भी उसे रौंद सके, तब तक उसे स्वतंत्र सत्य की झांकी नहीं होती |" ऐसी असीम और अतुल विनम्रता के कारण ही गांधीजी आत्मोपलब्धि की सीमा को छू सके और आत्मालक्षिता का सुचारू रूप से परिचय दे सके | उनकी यह आत्मलक्षिता सत्य की आराधना से शुरू होकर वहीँ पूर्ण होती है | उन्होंने महात्मा बनने के बाद आत्मकथा लिखी, किंतु कथा में कहीं भी ऐसा प्रतिपादन नहीं किया कि उनके महात्मय का बीज उनके शैशवकाल में निहित है | सर्वत्र अपने को एक साधारण मनुष्य के रूप में चित्रित किया है | यही वजह है कि उनकी आत्मलक्षिता कहीं भी पाठक के हृदय को चुभती नहीं है | 'सत्य के आग्रह' का कवच ओढ़कर निर्द्वन्द्व होकर विचारनेवाले इस महामानव पर आत्मकथा में चित्रित अन्य किसी पात्र का व्यक्तित्व उनपर हावी नहीं हो पाया |

3). यथार्थ का संस्था तथ्य का निरूपण:-

जिस प्रकार एक इतिहासकार तथ्यों की जाँच-पड़ताल करते हुए सत्य तक पहुँचने के लिए जूझता रहता है, उसी प्रकार गांधीजी अपने देश-काल के तथ्यों को पूर्णत: परखते हुए आगे बढ़ते हैं | गांधीजी के व्यक्तिगत जीवन के इस ऐतिहासिक दस्तावेज में तत्कालीन देश-काल के चित्रण में भी यथार्थ के संस्पर्श को स्पष्ट देखा जा सकता है | इसी प्राण तत्व को मद्दे नजर रखने से गांधीजी का व्यक्तित्व सर्वत्र उभरकर प्रत्यक्ष हो सका है| इस प्रकार एक ईमानदार आत्मकथा लेखक इतिहासकार की भूमिका निभाता है, किंतु तथ्य के प्रति उसकी अवधारणा कुछ भिन्न होती है | इतिहासकार का संबंध घटनाओं के परिणाम से हैं, जबकि आत्मकथाकार घटनाओं का ही एक अविभाज्य हिस्सा होता है | गांधीजी के ही शब्दों में - "मैं अपने प्रयोगों के विषय में किसी प्रकार की संपूर्णता का दावा नहीं करता | जैसे एक वैज्ञानिक अपने प्रयोग नियमानुसार, विचारपूर्वक एवं सुक्ष्मता के साथ करता है, किंतु फिर भी प्राप्त निष्कर्षों को अंतिम करार नहीं देता अथवा निष्कर्षों के प्रति सशंक या तटस्थ ही रहता है, उसी प्रकार का दावा मैं अपने प्रयोगों के संबंध में करता हूँ |" उसमें इतिहासकार और साहित्यकार दोनों का समन्वय है |

4). विश्वसनीयता:-

विश्वसनीयता आत्मकथा का अत्यंत महत्वपूर्ण लक्षण है | आत्मकथा लेखक को इसके लिए पर्याप्त सावधानी बरतनी पड़ती है | कहने की आवश्यकता नहीं कि सत्य के अन्वेषी गांधीजी की आत्मकथा में यह गुण सर्वत्र एवं स्वाभाविक रूप से ही परिलक्षित होता है |सत्य ही उनकी आत्मकथा का चरित्र नायक है | उनका 'मैं' (अहम्) कहीं भी उभरकर नहीं आता | अन्य पात्रों - नारायण हेमचंद्र, रायचंद, गोखले, फिरोजशा, तिलक, पोलोक, राजचंद्र, सेठ अब्दुल्ला और राजेंद्रबाबू आदि के चित्रण के समय भी वे पर्याप्त सतर्कता से

काम लेते हैं | गांधीजी ने चित्रण में सर्वत्र यथार्थ का ध्यान रखा है | उनका यथार्थवाद भी कुत्रिम न होकर स्वाभाविक है | वह जीवन के ठोस सत्य पर आधारित है | सत्यकथा पर आधारित उपन्यास लिखना अपेक्षाकृत आसान है किंतु यथार्थ की भाव भूमि पर सौंदर्य की अनुभूति कराना आसान नहीं है | ' सत्य के प्रयोग' में हमें इसकी सर्वत्र प्रतीति होती है | उनकी अद्वितीय विनम्रता और उनके व्यक्तित्व को ही प्रस्तुत आत्मकथा की विश्वसनीयता का श्रेय जाता है |

5). तटस्थता:-

आत्मकथा-लेखन में संतुलन सहज एवं सुलभ नहीं है | किंतु 'सत्य के प्रयोग' में यह संतुलन सर्वत्र सुलभ दिखाई देता है | जगजीवन को देखने का उनका दृष्टिकोण निराला है | साथ ही उन्होंने संवेदना के स्तर पर आंतर-बाहर संघर्षों का भी सहज निरूपण अत्यंत ही कलात्मक ढंग से किया है | भूल आदमी से ही होती है -इस सत्य की प्रतीति पाठक को 'चोरी और प्रायश्चित' प्रकरण पढ़ने पर होती है | पिता के समक्ष चिट्ठी प्रस्तुत करके सोने के कड़े की चोरी करने के अपने अपराध की स्वीकृति करनेवाले गांधीजी पिताजी की आँख के आंसुओं को देखकर हिल उठते हैं | वे उनसे अहिंसा का बोधपाठ ग्रहण करते हैं | विलायत में एक वृद्ध महिला से उनका परिचय होता है | फलत: उत्पन्न परिस्थिति से मुक्त होने के लिए उक्त महिला के नाम चिट्ठी लिखकर अपनी भूल के लिए क्षमा मांगते हैं | इस प्रकार लज्जा और भीरुता से उत्पन्न समस्या सत्य के सहारे सुलझ जाती है -इसके लिए पठनीय है - 'असत्यरुपी विष' शीर्षक प्रकरण | इस समूचे प्रकरण में अपने प्रति गांधीजी की तटस्थता के दर्शन होते हैं | 'निर्बल के बल राम' प्रकरण में अत्यंत तटस्थभाव से उन्होंने अपनी स्वाभाविक दुर्बलताओं को उद्घाटित किया है | अपने प्रति अद्भुत निर्ममता का भाव रखने के कारण ही गांधीजी की आत्मकथा में पदे-पदे हमें तटस्थता के दर्शन होते हैं |

6) आत्मनिरीक्षण

प्रसिद्ध विद्वान इ. ए. बेईट्स ने लिखा है - "...a great storehouse of first hand, vivid, authentic information about human personality, in all its variety, beauty, depth, intricacy, squalor and grandeur."

जिस प्रकार सागर में तैरती हुई हिमशिला का अल्पांश ही दिख पड़ता है, उसी प्रकार आत्मकथा में भी मानव-मन की अतल गहराइयों तक पहुँचने में उसके लेखन को बड़ी कठिनाई की और उलझन का सामना करना पड़ता है | आत्मनिरीक्षण आत्मकथा-लेखन के महत्वपूर्ण सोपानों में से एक है | गांधीजी 'सत्य के प्रयोग' में निरंतर आत्मनिरीक्षण करते हुए दिखाई देते हैं | 'मेरी उलझन', 'स्वामित्व', 'संसार प्रवेश', 'कुलीपन का अनुभव', ' धर्म संकट', 'एक सावधानी', 'व्याज चोर', 'मृत्युशैया पर' आदि प्रकरणों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि गांधीजी आत्मनिरीक्षण के पश्चात आत्मपरीक्षण भी करते रहते हैं | गांधीजी लिखते हैं - "अभी स्त्री के साथ मेरा संबंध मेरी इच्छा अनुसार स्थापित नहीं हुआ | विलायत जाने तक भी मैं अपना द्वेषपूर्ण स्वभाव त्याग नहीं सका | हर बात में मेरी घृणा और शंका बरकरार रही... | ...मेरी विषयासक्ति ने मुझे वह काम करने ही नहीं दिया | इस प्रकार उनके व्यक्तित्व के

विकास में आत्मपरीक्षण का विशेष योगदान है |

7). देश का निरूपण:-

अन्य साहित्यिक विधाओं की भाँती आत्मकथा-लेखन को भी अपने देश-काल के प्रति जागरुक एवं प्रामाणिक रहना अनिवार्य है | केवल स्वजीवन का ब्यौरा ही पर्याप्त नहीं है | गांधीजी के लिए अपने जन्म स्थान, दक्षिण अफ्रीका की वकालत, उनके अपने अंतरंग साथियों का विवरण, हिंद का सत्याग्रह आदि के अभाव में अपनी आत्मकथा का आलेखन संभव नहीं था | लेखक जब अपने कर्म - जगत का निरूपण करता है, तब समकालीन देश-काल का निरूपण अनायास उनकी रचना में प्रविष्ट हो जाता है | रिश्तेदारों, मित्रों, परिचितों एवं जीवन की विधायक घटनाओं का चित्रण आत्मकथा -लेखक के लिए अति आवश्यक है | अपनी असफलताओं के लिए जिम्मेदार परिस्थितियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना भी उसके लिए आवश्यक है | इस दृष्टि से 'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा के अतिरिक्त एक बहुमूल्य दस्तावेज सिद्ध होता है | सतीश व्यास के अनुसार - "यह एक मूल्यवान दस्तावेज है | इसमें कैमरे की छोटी सी आँख से लिया गया विराट समय-फलक का यथार्थ चित्रण अंकित है | आत्मकथा में गांधीजी ने तत्कालीन गुजरात, भारत, अफ्रीका तथा यूरोप के अन्य देशों का ऐतिहासिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विवरण बड़ी सूक्ष्मता के साथ निरूपित किया गया है | इस निरूपण में गांधीजी में हमें छिपे हुए एक आदर्श इतिहासकार के भी दर्शन सहज ही होते हैं | तत्कालीन मानव-मन की वृत्तियों को टटोलने और उन्हें बेबाक तरीके से चित्रित करने की गजब की सूझ-बूझ गांधीजी में दिखाई देती है | अपनी इसी पारखी नजर के कारण ही वे 'महात्मा' के महान पद तक पहुँच सके थे |" पाँच खंडों में विभक्त अपनी आत्मकथा के अधिकांश खंडों में अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों एवं स्थल विशेष पोरबंदर का चित्रण किया है | इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका और तत्पश्चात गुजरात के साबरमती आश्रम का स्थल विशेष के रूप में निरूपण किया है |

8). संघर्ष निरूपण:-

सत्य के प्रयोग में गांधीजी ने अत्यंत लाघावपूर्वक आंतर-बाह्य संघर्षों का निरूपण किया है | 'पिताजी की मृत्यु और मेरी दोहरीशरम' शीर्षक प्रकरण में गांधीजी लिखते हैं, -"पिताजी चल बसे ! अब मेरा पश्चाताप करना किस काम का ? मैं बहुत शर्मिंदा हुआ | बहुत दु:खी हुआ | भागकर पिताजी के कमरे में जा पहुँचा | मैं समझ गया कि यदि मैं विषयांध न होता तो इस अंतिम घड़ी में मुझे यह भी वियोग न देखना पड़ता और पिताजी के अंतिम घड़ियों में उनके पैर दबाता होता | अब तो मुझे अपने काकाजी के ही मुख से सुनना होगा |" अंततः संघर्ष के क्षणों के बाद गांधीजी स्वीकार करते हैं | उनकी इस स्वीकारोक्ति में ही उनके व्यक्तित्व की सरलता और गरिमा व्यक्त होती है | उनका यही अंत:संघर्ष आत्मकथा के 'चोरी और प्रायश्चित', 'दु:खद प्रसंग १-२', 'शर्मिलापन-मेरी ढाल', 'असत्य रुपी विष', 'मेरी उलझन', 'कुलीपन का अनुभव', 'प्याज चोर', 'एक पुण्य स्मरण और प्रायश्चित', 'घर में सत्याग्रह', 'वह सप्ताह', आदि प्रकरणों में बिखरा पड़ा है | आंतर-बाह्य संघर्षों के निरूपण में सर्वत्र उनकी हार्दिक निश्छलता शामिल रही

है | 'पहाड़ जैसी भूल' प्रकरण में भी गांधीजी लिखते हैं- "जब हम पराये गज जैसे दोषों को रज के बराबर और अपने राई के बराबर दोस्तों को पहाड़ के समान देखना समझना सीखते हैं, तभी हम अपने-पराये दोषों का यथार्थ स्वरूप समझ सकते हैं |

9) स्मृति:-

गांधीजी के बचपन-संबंधी प्रकरणों के वर्णन में हमें उनकी तीव्र स्मरण-शक्ति के दर्शन होते हैं | विस्मृति तो मानव का स्वाभाविक लक्षण है, किंतु गांधीजी को अपने बचपन की छोटी-से-छोटी बातें बखूबी याद है | गांधीजी लिखते हैं – "जितना जो कुछ - मुझे याद है, वह सारा का सारा मैं 'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा में नहीं दे रहा हूँ यह मैं जानता हूँ |" स्पष्ट है कि गांधीजी ने विगत जीवन की अधिकांश बातें याद होते हुए भी नीर-क्षीर विवेक से काम लिया है | तथ्यों के साथ-साथ गांधीजी तत्कालीन समय के भी रंग भी ठीक से याद करने के बाद ही उनका निरूपण करते हैं | तभी उसमें सत्य और यथार्थ का सन्निवेश होता है | दक्षिण अफ्रीका, पोरबंदर, अहमदाबाद और भारत के अन्य प्रदेशों में उन्होंने जो प्रवृत्तियाँ की, उनका यथार्थ और रसपूर्ण वर्णन करने से विश्वसनीयता की रक्षा हुई है |

10) सत्य कथन:-

'सत्य के प्रयोग' के लेखक के लिए सत्यकथन तो जैसे अनिवार्य शर्त थी | गांधीजी बड़ी निर्ममता के साथ सत्यकथन का आग्रह रखते हैं | आत्मकथा के आरंभ में ही उन्होंने लिखा है- "मैं सत्य रूपी परमेश्वर का पुजारी हूँ, शेष सब तो मिथ्या है | यद्यपि वह सत्य मुझे मिला नहीं है, मैं निरंतर उसकी तलाश में हूँ | इसके लिए मैं अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का भी त्याग करने के लिए तत्पर हूँ | इस तलाश रूपी यज्ञ में मैं अपने तन की आहूति देने के लिए तैयार हूँ | अपनी इस शक्ति में मुझे विश्वास है |" गांधीजी की सत्य के प्रति इस कदर निष्ठा उनकी विनम्रता पर निर्भर है | अफ्रीका के आंदोलन से लेकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम तक वे सत्य के अजेय योद्धा के रूप में सर्वत्र अविचल रहे | अपनी छोटी से छोटी भूल का न केवल उन्होंने स्वीकार किया, किंतु 'पहाड़ सरीखी भूल' भूल बताते हुए अंतःकरणपूर्वक पश्चाताप किया | उपवास आदि करके प्रायश्चित भी किया | 'सत्य के प्रयोग' में सत्य ही सर्वत्र प्रतिष्ठित दिखाई देता है |

11) अपूर्णता:-

किसी भी आत्मकथा के लिए उसकी अपूर्णता ही उसकी स्वाभाविक है | अन्य आत्मकथाओं की भाँती गांधीजी की आत्मकथा भी एक निश्चित समय की सीमा-रेखाओं में निबद्ध है | इसलिए डन (Dunn) का कथन है- " The True Autobiography, However is but a torso." अतः समय-क्रम की अपूर्णता आत्मकथा की अनिवार्य मर्यादा है | दूसरे शब्दों में हम अधूरेपन को आत्मकथा का लक्षण भी मान सकते हैं | 'सत्य के प्रयोग' में गांधीजी के जीवन के इक्यावन (51) वर्षों के कालखंड का आलेखन हैं | इतने सुदीर्घ कालखंड के इतिवृत को पाँच भागों में विभक्त किया है | लगभग पाँच सौ पृष्ठों के आसपास रची गई इस आत्मकथा में आकार का अपना एक असंतुलन है | गांधीजी नीर-क्षीर विवेक से सुपरिचित हैं | छोटी उम्र में विवाह, विवाह संबंधित मिथ्या धारणाओं से प्राप्त स्वामित्व, यौनवृत्ति की दुर्निवारता आदि का उन्होंने यथार्थ वर्णन किया है | फिर भी कुछ छूट

जाना स्वाभाविक था | किंतु इसी अपूर्णता के कारण उनकी आत्मकथा अद्‌वितीय एवं अप्रीतम है |

12) निरूपण-शैली:-

भाषा शैली की दृष्टि से 'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा सराहनीय है | 'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा की भाषा सरल और सुबोध होते हुए भी मर्मस्पर्शी है | शैली सहज, सरल एवं मिताक्षरी है | कहीं कोई आयासजन्य कृत्रिमता दिखाई नहीं देती | जीवन ही उनका कवन है | यही कारण है कि आत्मकथा में कहीं दंभ, आडम्बर या वाचाल शब्दों का जमघट लक्षित नहीं होता | डॉ.उपेन्द्र भट्ट लिखते हैं - "उनकी कलम की शक्ति उनकी चरित्रगत शक्ति की ही अनिवार्य परिणति है | 'जैसा शील वैसी शैली' का उत्कृष्ट निदर्शन है - गांधीजी की प्रस्तुत आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' | उनके चरित्र के समान उनकी शैली भी सात्त्विक, सत्यनिष्ठ, संयमित, सरल, संक्षिप्त, सचोट, विराट और मर्मवेधक है |" कहीं-कहीं तो गांधीजी ने जैसे केवल क्रियाओं के सहारे ही बहुत कुछ कह दिया है | जैसे - "मैं चेत गया, मैं चुप रहा', 'मैं आया, छटपटाया, खीज उठा' कहीं मुहावरे और कहावतों ने भाषा-शैली में चार चाँद लगा दिए हैं | जैसे - 'जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय', 'जैसा आहार वेसी डकार | इस प्रकार गांधीजी की गद्य-शैली में प्रवाहमयता, ऋजुता, प्रासादिकता के साथ-साथ माधुर्य और क्वचित् ओज गुण के भी दर्शन होते हैं |

निष्कर्ष:-

गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' वस्तुतः सत्य की ईमानदार तलाश पहले है, आत्मकथा बाद में | सत्य के अन्वेषी को मार्ग के कितने कष्टों की चुभन और बाधक पत्थरों की ठोकरें सहन करनी पड़ती है | जल और मिट्टी से लेकर आहार तथा ब्रह्मचर्य एवं सत्याग्रह तक गांधीजी ने सत्य की खोज के जो प्रयोग किये उन सबका अक्षय भंडार है उनकी यह आत्मकथा | 'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा के संदर्भ में सुरेश जोशी लिखा है - "सत्य और सिद्‌धि के बीच सेतुबंध की रचना करने वाला यह अभिनव राम अप्रतिहत योद्‌धा था |"

इसके अलावा महात्मा गांधी द्‌वारा लिखित 'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा के संदर्भ में काका कालेलकरने लिखा है - "गांधीजी की आत्मकथा अथवा सत्य विषयक उनके प्रयोगों का बयान आज विश्व साहित्य में प्रतिष्ठित हो चुका है |"

संदर्भ:-

1) सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा- मो. क. गांधी

नवजीवन पब्लिकेशन हाउस,

अहमदाबाद- 380 014